

ब्रह्मांडीय विज्ञान का बीज: आद्यशक्ति गायत्री

२१वीं सदी के लिए प्राचीन आध्यात्मिक तकनीक का डिकोडिंग

गायत्री महामंत्र केवल एक प्रार्थना नहीं,
बल्कि एक समग्र धर्मशास्त्र और ब्रह्मांडीय
ऊर्जा का नाभिक (Nucleus) है।

यह भारतीय संस्कृति के वाङ्मय का
सबसे उन्नत वैज्ञानिक सूत्र है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

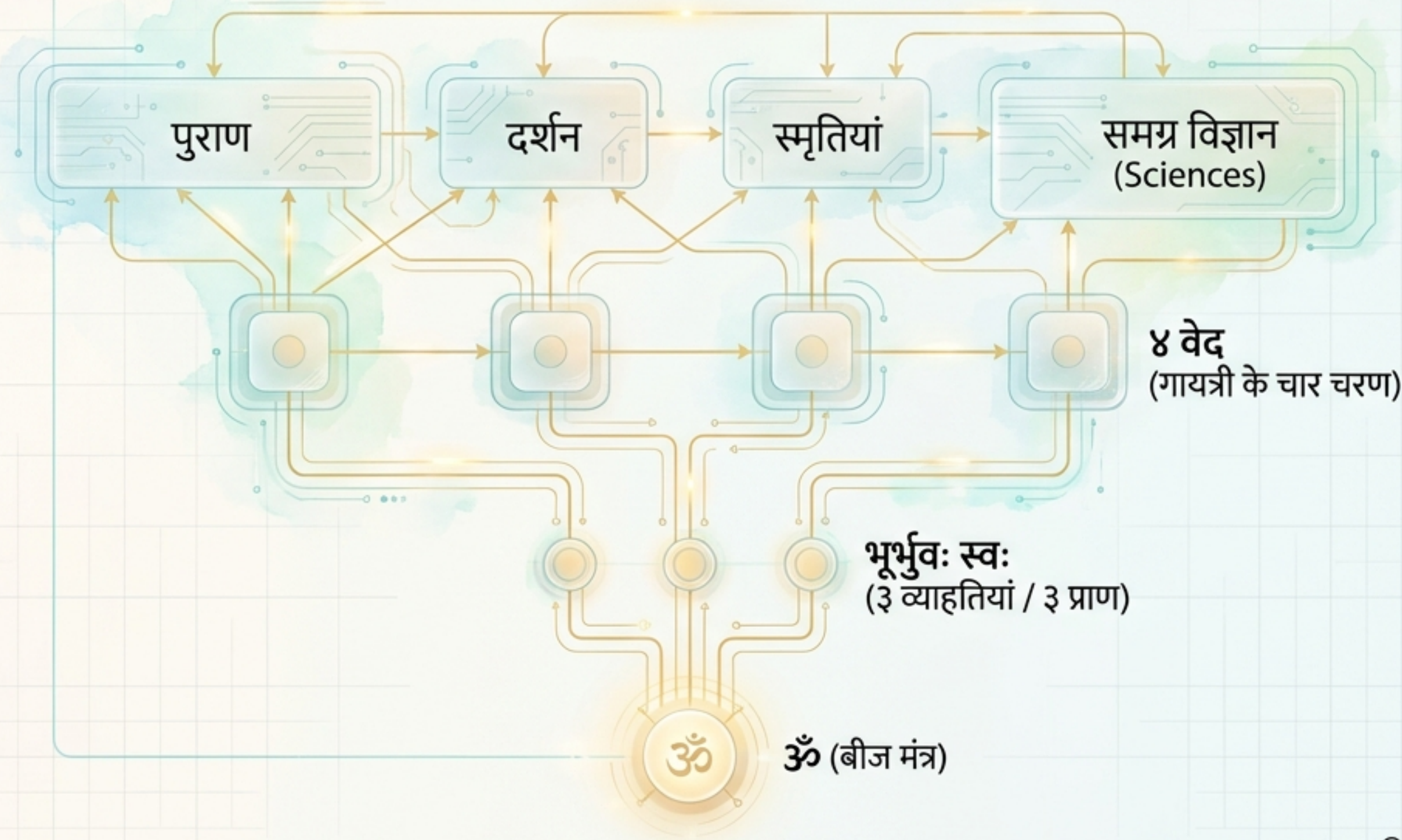
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा ज्ञान शरीर प्रकाश। “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। और आप सबसे कहिंगा – सब बच्चों से कहिगा और अपूर्ण के बीच में पहुँचना ही चाहिए कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर के मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के सरे बच्चों से कहियेगा कि तक पहुँचाने का प्रयास करें।” रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

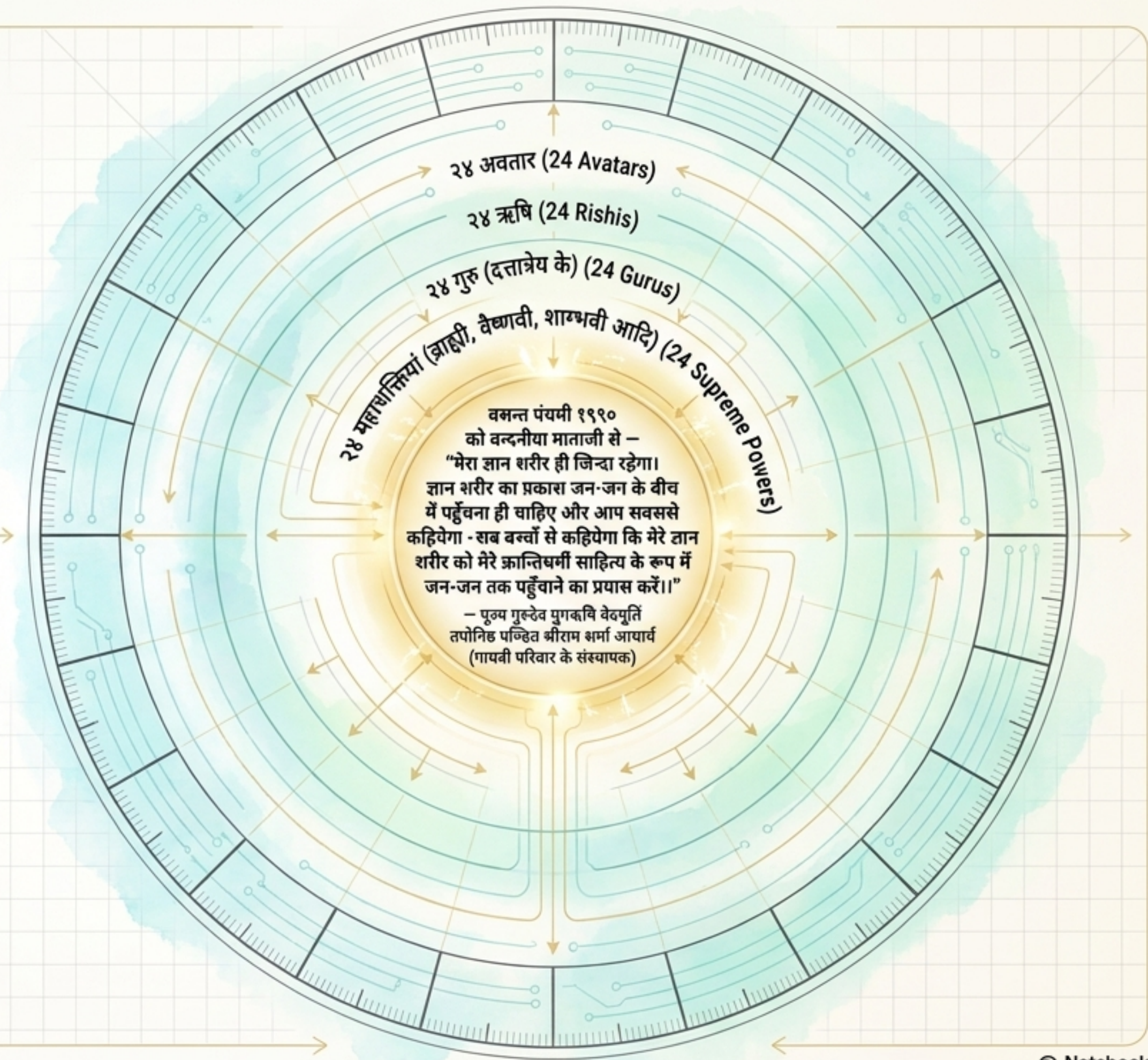
ज्ञान का ब्रह्मांडीय विस्तार (Fractal of Knowledge)

सृष्टि के आरंभ में ॐकार से ३ तत्त्वों का जन्म हुआ।
विस्तार के रहस्य: एक से अनेक, और अनेक से एक।
सम्पूर्ण वेद, शास्त्र, और विज्ञान एक ही उद्गम-स्रोत 'गायत्री' का विस्तार हैं।



२४-अक्षरों का शक्तिपुञ्ज (The 24-Pin Power Grid)

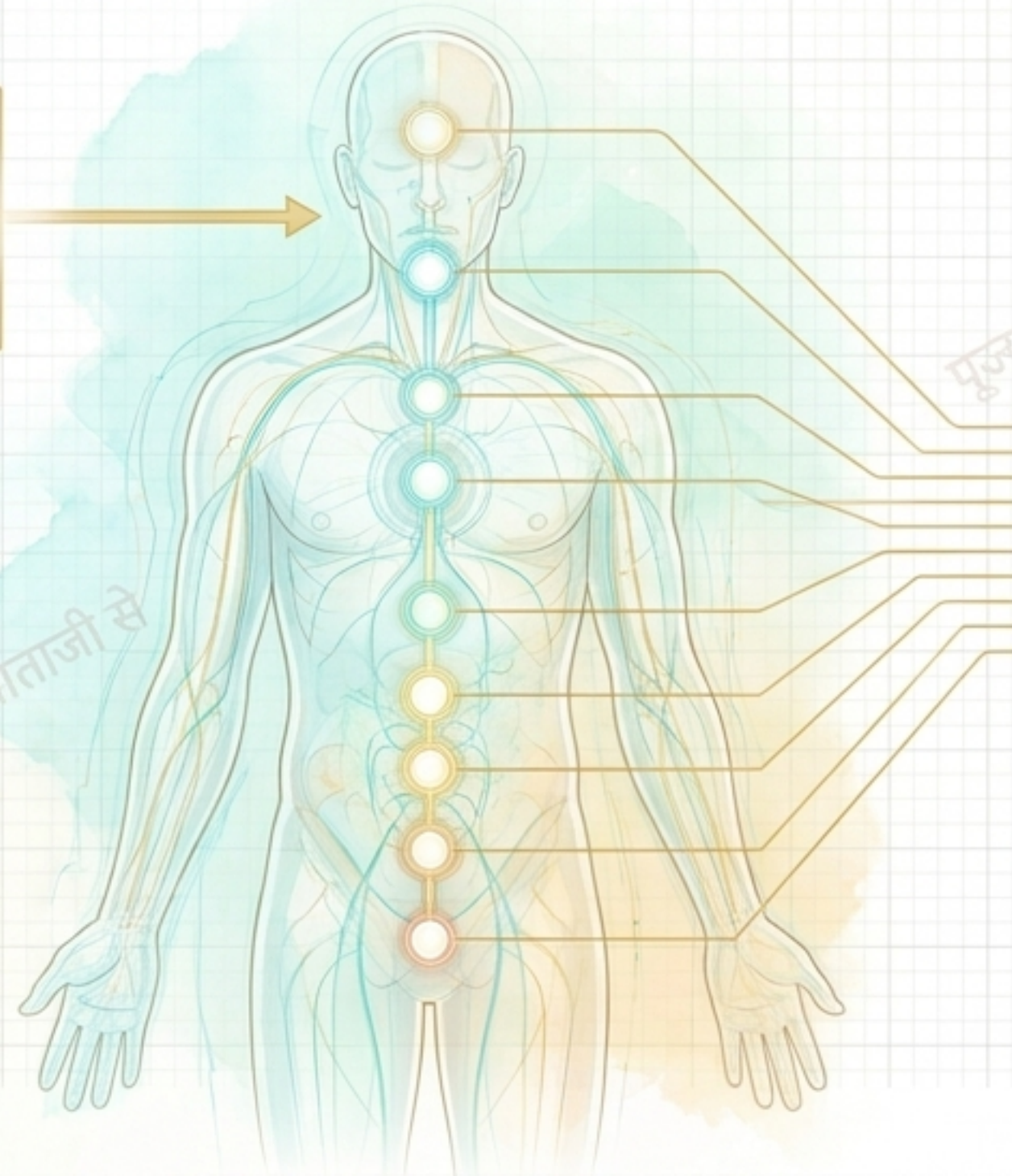
प्रत्येक अक्षर एक विशिष्ट
सद्गुण और ब्रह्मांडीय शक्ति का
ट्रिगर है। यह उच्चारण शरीर
और मन के मर्मकेन्द्रों पर अचूक
प्रभाव छोड़ता है (जैसे
टाइपराइटर की कुंजी दबाने से
अक्षर छपता है)।



सूक्ष्म शरीर की एनाटॉमी (Biology of the Subtle Body)

मंत्र उच्चारण 'टेलेक्स' (Telex) या वीणा के तारों की तरह काम करता है।
ध्वनि का दबाव शरीर की सोई हुई दिव्य ग्रंथियों (शक्ति-केन्द्रों) को जाग्रत कर विशिष्ट ऊर्जा उत्पन्न करता है।

Input:
मंत्र उच्चारण
(Acoustic Pressure on
mouth, throat, palate)



Internal Grid:
६ चक्र (Chakras)
+
३ ग्रंथियां (Granthis)
=
९ शक्ति-केन्द्र
(9 Energy Centers)

Output:
८ सिद्धियां (Siddhis)
+
९ ऋद्धियां (Riddhis)

रूपांतरण के एंटेना: शिखा और सूत्र

शिखा और सूत्र केवल कर्मकांड नहीं, बल्कि मानव-पशु से मानव-देव (द्विजत्व) में प्रवेश करने के निरंतर रिमानडर (रिमोंडंटर सर्किट) हैं।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्म साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

शिखा: मस्तिष्क पर गायत्री का ध्वजारोहण / Cosmic Antenna



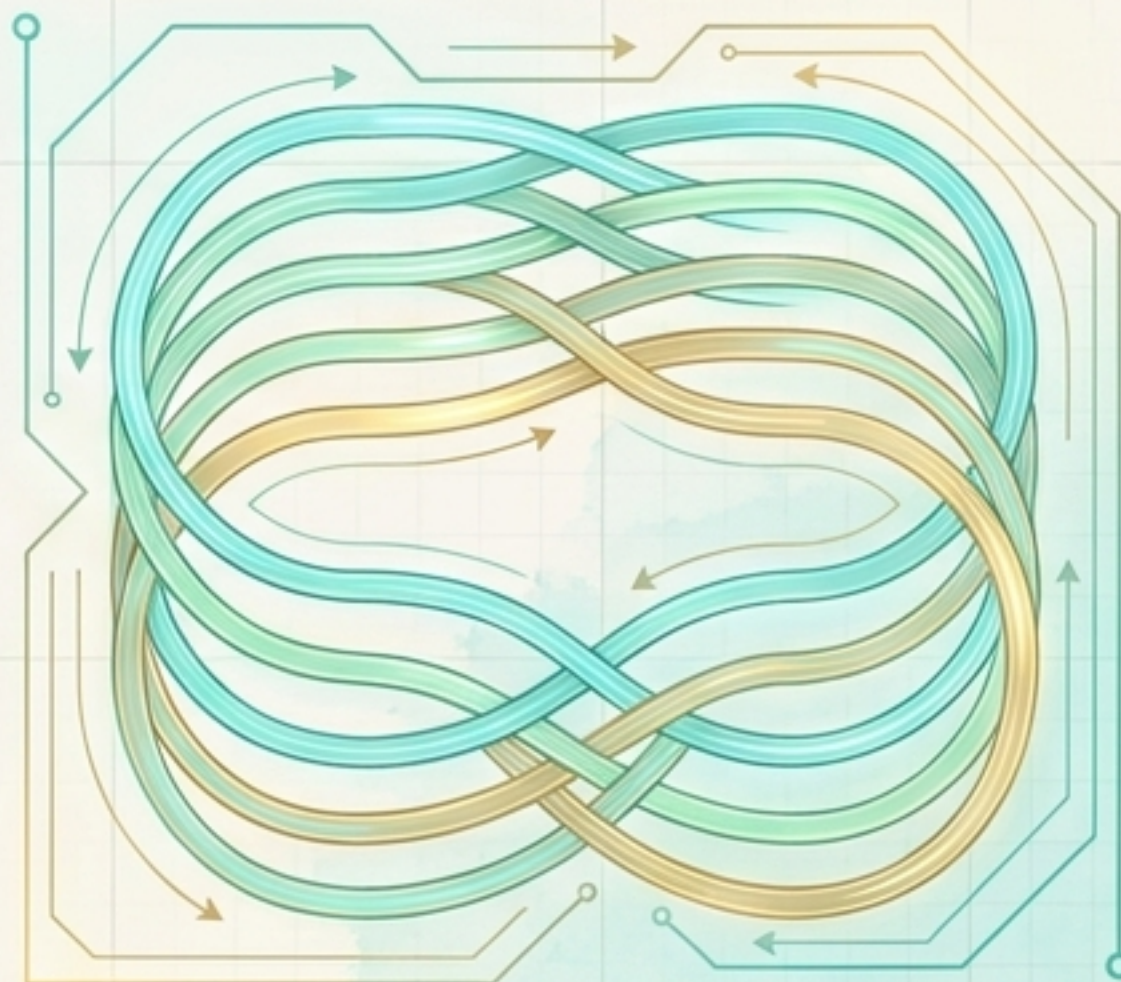
अनुशासन वर्ग (5):

श्रमशीलता,
शिष्टता, मितव्ययिता,
सुव्यवस्था,
उदार सहकारिता।

आध्यात्मिक देव-संपदा

(4):

समझदारी, ईमानदारी,
जिम्मेदारी, बहादुरी।



रूढ़ियों का खंडन: सार्वभौमिक अधिकार (Universal Access)

मध्यकाल के मनगढ़ंत प्रतिबंधों ने गायत्री को सीमित कर दिया था। युग निर्माण योजना ने इसे पुनः जन-जन का अधिकार बना दिया है।

मध्यकाल (अंधकार-युग) / The Dark Ages

सामंतवादी विकृतियां (Feudal distortions)

केवल ब्राह्मणों तक सीमित (Restricted to Brahmins)

स्त्रियों का निषेध (Women excluded)

गुप्त प्रथा (Secretive)

२१वीं सदी (युग निर्माण) / 21st Century

सार्वभौम मान्यता (Universal Access)

वैज्ञानिक प्रयोग (Scientific application)

बिना भेदभाव के सभी के लिए (For all, without discrimination)

नारी शताब्दी (Century of Women)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

विश्वमाता का तर्क और 'नारी-शताब्दी'

परम स्रष्टा
(Supreme
Creator)



प्रथम अभिव्यक्ति:
प्रकृति / नारी
(First Manifestation:
Nature/Feminine)



प्राणिमात्र
का उद्भव
(Birth of all
beings)



ईश्वर को सर्वप्रथम
'माता' के रूप में
पूजा जाता है
(त्वमेव माता च
पिता त्वमेव)।

गायत्री को नारी-रूप
में मान्यता देना
शाश्वत परंपरा का
पुनर्जीवन है।

आगामी २१वीं सदी
'नारी शताब्दी'
है—जहां नारी-वर्चस्व को
प्राथमिकता मिलेगी।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का
प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए
और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा
कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के
रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

सर्वोच्च समीकरण: गायत्री + यज्ञ

गायत्री और यज्ञ भारतीय संस्कृति के जनक-जननी (प्रकृति और पुरुष) हैं। दोनों के सम्मिलन से ही पूर्ण आधार विनिर्मित होता है।



यज्ञ का विज्ञान: ब्रह्मवर्चस् शोध (Science of Yagya)

यज्ञ केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं, बल्कि एक उन्नत 'इकोलॉजिकल' और 'मेडिकल' विज्ञान है। यज्ञ की ऊर्जा भौतिक और आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों को ऊर्ध्वगामी बनाती है।

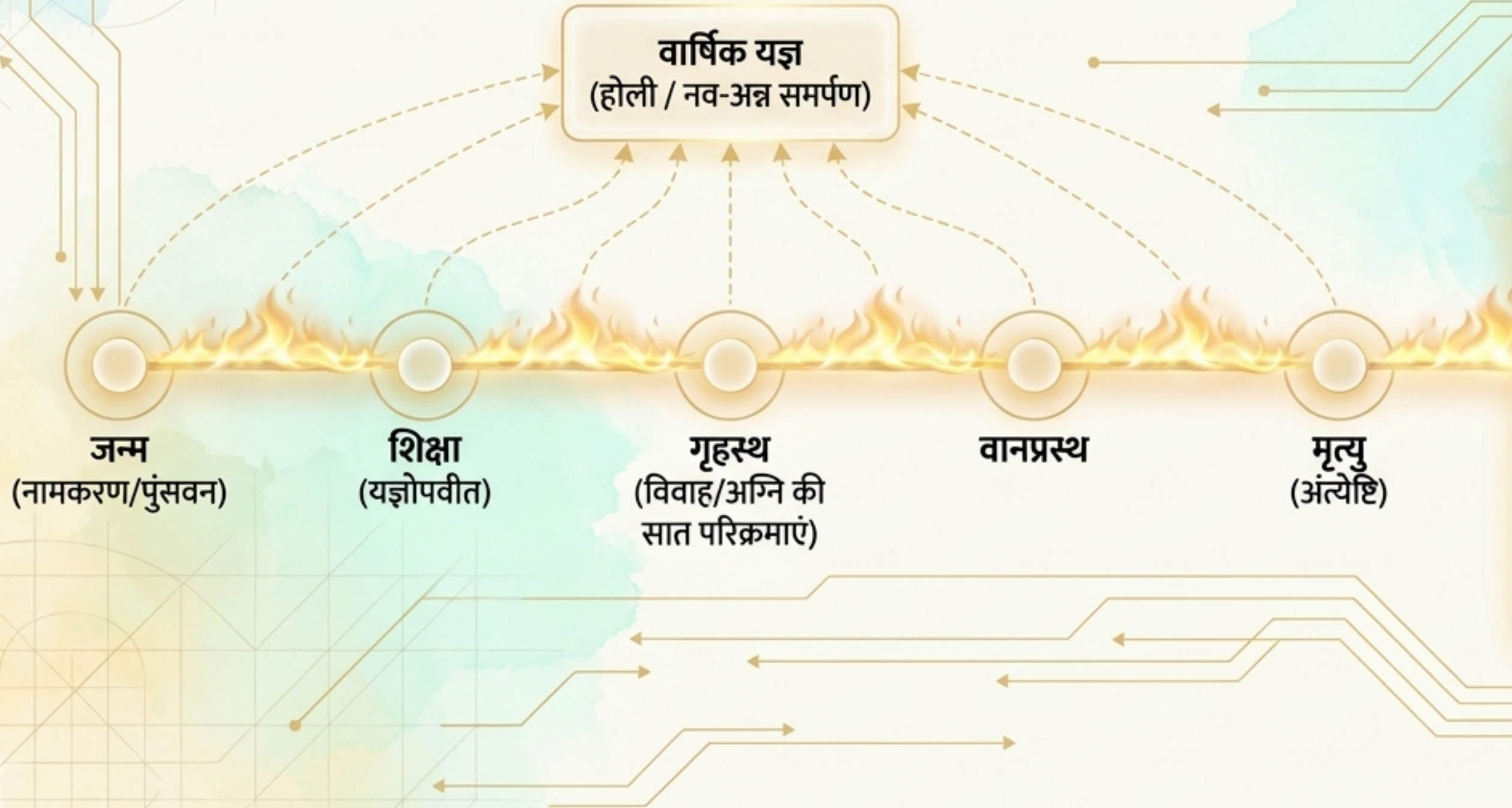


Research Motivation

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

जीवन-चक्र का ब्लूप्रिंट (The Lifecycle Blueprint)

जन्म से लेकर मृत्यु तक, हर भारतीय संस्कार यज्ञाग्नि की गोद में संपन्न होता है।
अग्नि हमें अपनी ऊर्जा और तेजस्विता प्रदान करती है।



वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान
शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना
ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर
को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराय शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

एम्पलीफायर प्रभाव (The Amplifier Effect)

रेडियो और दूरसंचार की तरह, यज्ञ की ऊर्जा गायत्री मंत्र की शब्द श्रृंखला के साथ मिलकर स्थानीय कृत्य को विश्वव्यापी बना देती है।

Physical World

सूक्ष्म आवाज
(Small Voice)

+



लाउडस्पीकर
(Loudspeaker)

व्यापक श्रोता वर्ग तक पहुंच
(Massive Audience Reach)

Spiritual World

गायत्री मंत्र
(Subtle Mantra)

+



यज्ञाग्नि की बिजली
(Fire Energy)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा —
सब वच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को काहित्य
के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

व्यापक जनमानस का परिष्कार
(Mass Consciousness Transformation)

दीप यज्ञ: कॉम्पैक्ट पावरहाउस (Deep Yagya)

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा
रहेगा। ज्ञान शरीर का
प्रकाश जन-जन के बीच में
पहुँचना ही चाहिए और
आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे
क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप
में जन-जन तक पहुँचाने
का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित
श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

महंगाई और समय की कमी को देखते हुए ‘दीप यज्ञ’ एक अभिनव वैज्ञानिक प्रयोग है।
चिंगारी छोटी होने पर भी उसमें दावानल (forest fire) बनने की क्षमता होती है।

Analogy



छोटी बैटरी
(Small Battery)

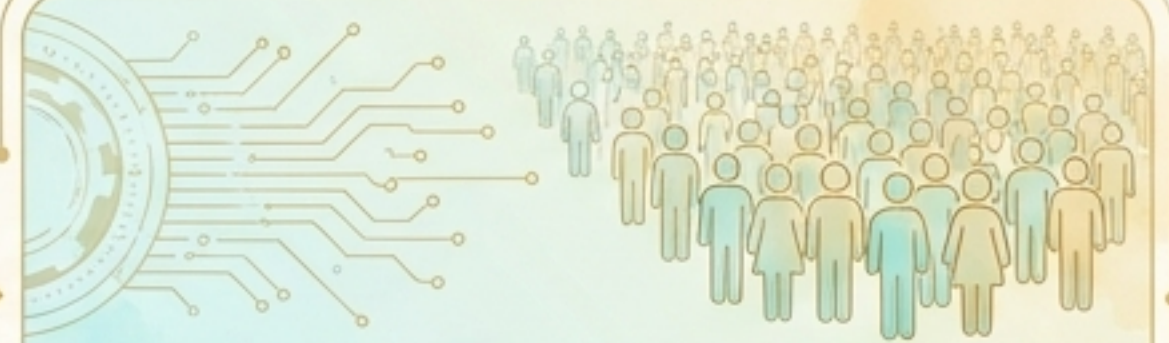


साल भर घड़ी चलाती है
(Powers a watch for a year)

Application



दीप यज्ञ
(Deep Yagya / Lamp Fire)



न्यूनतम खर्च और समय में जन-जागरण
(Powers Mass Spiritual Awakening
without high cost)

युग संधि: युग परिवर्तन की वेला (The Era Transition)

बुद्धि का भटकाव ही वर्तमान संकटों का मूल कारण है।
इस अंधकार को पार करने के लिए 'विचार क्रांति' ही एकमात्र सेतु है।

२०वीं सदी
(20th Century) -
संकट, विग्रह और
अवांछनीयताएं
(Crisis & Unrest)

युग संधि
(Yug Sandhi) -
वर्तमान १० वर्षीय अवधि
(The Era Transition)

२१वीं सदी
(21st Century) -
उज्ज्वल भविष्य और
सतयुग की वापसी
(Return of Satyug)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

महान आध्यात्मिक प्रयोग (The Great Spiritual Experiment)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

१ लाख
दीप यज्ञ

१ करोड़
भागीदार

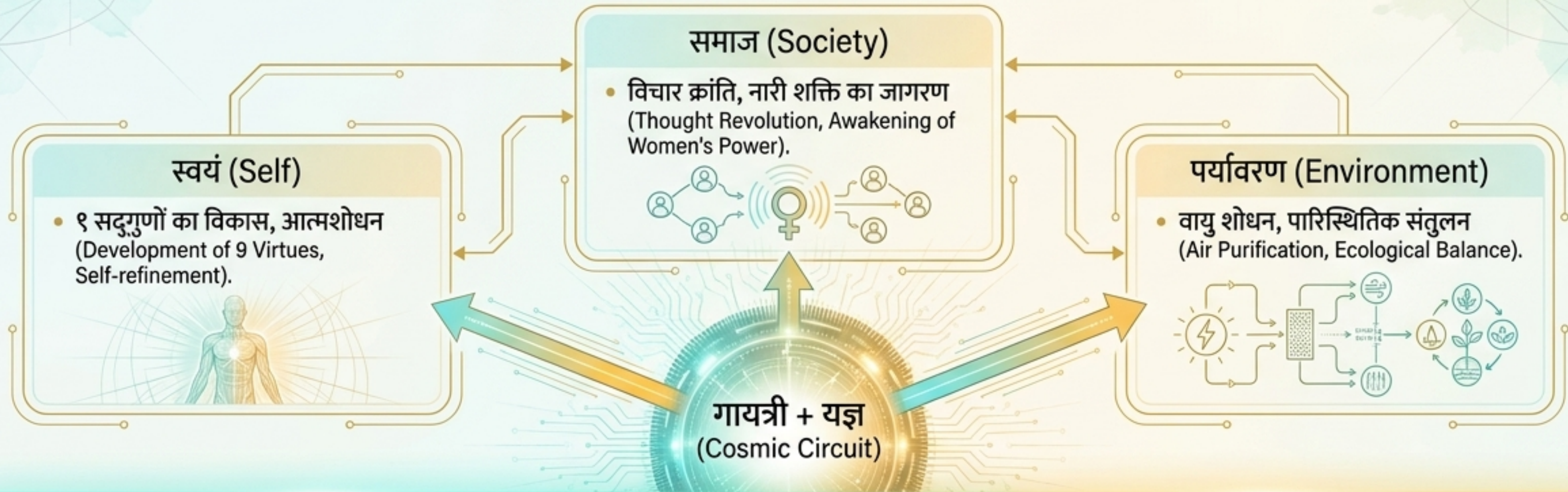
यह भागीरथी गंगावतरण
जैसा अभिनव सुयोग है।

संगठित आध्यात्मिक प्रयोग
और सृजन-पुरुषार्थ मिलकर
‘मत्स्यावतार’ की तरह
विश्वव्यापी प्रभाव उत्पन्न
कर रहे हैं।

विचार क्रांति
→ नवयुग का अवतरण

परिपूर्ण परिपथ: समग्र क्रांति (Synthesis: The Complete Circuit)

उपासना (Spiritual Practice) + जीवन साधना (Life Discipline) + लोकमंगल (Social Welfare) = युग निर्माण।
यही २१वीं सदी के लिए आद्यशक्ति गायत्री की समर्थ साधना है।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)